This question paper contains 3 printed pages.

B.A. (Pt. - III)

Roll No. ....

3102 - II - A

Hin.Lit. - II

B.A. (Part - III) EXAMINATION - 2021

(For Non-Colligiate Candidate)

(Faculty of Arts)

(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(निबन्ध, उपन्यास और काव्यशास्त्र)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

downloaded from StudentSuvidha.com

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:– (9x4)

(क) जीवन, तुमसे ज्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है? क्या वह उस दीपक की भाँति क्षणभंगुर नहीं, जो हवा के एक झोंके से बुझ जाता है। पानी के एक बुलबुले को देखते हो, लेकिन उसे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन में उतना भी सार नहीं। साँस का भरोसा ही क्या और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओं के कितने विशाल भवन बनाते हैं। नहीं जानते नीचे जाने वाली साँस ऊपर आएगी या नहीं। पर सोचते इतनी दूर की हैं, मानो हम अमर हैं।

अथवा

महाराज दहेज की बातचीत ऐसे सत्यवादी पुरुषों से नहीं की जाती। उनसे संबंध हो जाना ही लाख रूपये के बराबर है। मैं इसी को अपना अहोभाग्य समझता हूँ। हा! कितनी उदार आत्मा थी। रूपये को तो उन्होंने कुछ समझा ही नहीं। तिनके के बराबर की परवाह नहीं की। बुरा रिवाज है, बेहद बुरा! मेरा बस चले तो दहेज लेने वालों और देने वालों को गोली मार दूँ, फिर चाहे फाँसी ही क्यों न हो जाए।

(ख) इस समय बालक को गोद में लिए हुए उसे वह तुष्टि हो रही थी जो अब तक कभी नही हुई थी। आज पहली बार उसे आत्मवेदना हुई; जिसके बिना आस नहीं बदलती, अपना कर्तव्य मार्ग नहीं सूझता। वह मार्ग अब दिखाई देने लगा।

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

अथवा

लेकिन यह क्या जानती थी कि पुरूषों के मुँह में कुछ और मन में कुछ और होता है। ईश्वर को जो मंजूर था, वह हुआ। ऐसे सौभाग्य से मैं बैधत्य को बुरा नहीं समझती। दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन साँप बनकर काटने दौड़े। उपवास कर लेना आसान है, विषैला भोजन करना उससे कहीं मुश्किल।

(ग) काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है। बाल्मीकि ने जिन–जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचंद्र में वरकाया था वे ही सब व्यास के समय में गुण हो गई। जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहां तक हो सके न जाने पावे।

अथवा

क्रोध दुःख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। साक्षात्कार के समय दुःख और उसके कारण के संबंध का परिज्ञान आवश्यक है। तीन–चार महीने के बच्चे को कोई हाथ उठाकर मार दे, तो उसने हाथ उठाते दी देखा है पर अपनी पीड़ा और उस हाथ उठाने से क्या संबंध है, यह वह नहीं जानता है। अतः वह केवल रोकर अपना दुःख मात्र प्रकट कर देता है। दुःख के कारण की स्पष्ट धारणा के बिना क्रोध का उदय नहीं होता।

(घ) भारतीय नाटकों में जो कहीं भी धर्मात्मा व्यक्ति पराजित नहीं होता, सद्विचार से अनुप्रणित होकर कठिनाइयों से जूझता हार नहीं जाता, वह इसी कर्मफल की व्यवस्था को मानने से। भारतीय काव्य में जो कवि अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने की अपेक्षा दूसरे के मनोभावों को व्यक्त करने का प्रयत्न करता है, यह अपने आपकी आनंदित वृत्ति को पहचानने के लिए। यहाँ कभी यूरोपीय नाटकों की भाँति पापात्मा अपनी कूटबुद्धि से धर्मात्मा को अंत तक पछाड़ने में सफल नहीं होता। हिन्दू कवि का उद्देश्य रस को व्यक्त करना है, वक्तव्य की अभिव्यक्त करना नहीं।

अथवा

संत साहित्य नई जातीय चेतना का साहित्य है। यह जातीय चेतना भाषाप्रेम के रूप में प्रकट होती है। संत कवि संस्कृत और फारसी की तुलना में भाषा के रस की प्रशंसा करते हैं। दिल्ली–दरबार के खिलाफ भारत की जातियों ने जो संघर्ष किया, उससे संत–साहित्य का निकट संबंध था। संत कवियों ने दरबारी वीर–रस का मार्ग छोड़कर प्राचीन महाकाव्यों के आधार पर वीर–भावना का संचार किया।

StudentSuvidha.com
Downloaded from
Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

2. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

'निर्मला' में दहेज और अनमेल विवाह के लिए एक संदेश निहित है। कथन को स्पष्ट कीजिए। 14

3. उपन्यास के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

उपन्यास की नायिका निर्मला का चरित्र चित्रण कीजिए। 14

4. क्रोध की सामाजिक उपयोगिता का विवेचन करते हुए क्रोध और अमर्ष व चिड़चिड़ाहट के भेद को उदाहरण सहित समझाइए। 14

अथवा

'छायावाद' के विषय में आचार्य नंददुलारे बाजपेयी के चिंतन को स्पष्ट कीजिए। 14

5. कर्मफल और पुनर्जन्म का सिद्धांत क्या है? स्पष्ट कीजिए और बताइए कि द्विवेदी जी ने इस संबंध में किन विचारों को प्रस्तुत किया है? 14

अथवा

ललित निबंधों के तत्वों और लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत कीजिए। 14

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए:– (4x2)

(i) यमक और श्लेष में अंतर।

(ii) चौपाई की परिभाषा व उदाहरण सहित व्याख्या।

(iii) रस को स्पष्ट करते हुए प्रमुख सिद्धांतकारों का परिचय।

(iv) शब्दशक्ति का संक्षिप्त परिचय।

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com